भारतीय आचार साहित्य की परम्परा

डॉ० सुनिल कुमार सिंह

भारतीय संस्कृति में मुख्यतः दो विचारधाराओं का सम्मिश्रण एवं समन्वय किया गया है। एक विचारधारा मूलतः वैदिक सभ्यता की थी और दूसरी श्रमण सभ्यता वैदिक सभ्यता के आधार स्तम्भ ऋग्वेद आदि संहिता ग्रन्थ तथा ब्राह्मण ग्रन्थ थे। श्रमण सभ्यता की प्रतिनिधि अभिव्यक्ति जैनधर्म; हिन्दुओं के सांख्य दर्शन तथा बौद्ध धर्म में हुई है। कुछ लोग वैदिक अथवा ब्राह्मण संस्कृति अर्थ वह संस्कृति जिस पर ब्राह्मण पुरोहितों का विशेष रूप से प्रभाव था और श्रमण संस्कृति के भेद को स्वीकार नहीं करते, किन्तु मानना ही होगा कि इन दो विचारधाराओं में पर्याप्त विषमता थी।

संहिता–कला में आर्य मुख्यतः प्रवृत्तिवादी जीवन दृष्टि के अनुगामी थे, जबकि जैन–बौद्ध–धर्मों निवृत्तिपरक जीवन पर गौरव था। स्वयं वैदिक आर्यों के बीच निवृत्ति धर्म का उदय उपनिषदों में देखा जा रहा है। इसलिए कुछ अन्वेषकों का विचार है कि निवृत्तिपरक जीवनदृष्टियों का सामान्य उत्स उपनिषद्– साथ है। किन्तु जैन–धर्म की प्राचीनता और महाभारत आदि में सांख्यों के ज्ञानमार्ग एवं प्रवृत्तिपरक वैदिक धर्म के विरोध की चर्चाएँ यह संकेत देती हैं कि शान्ति और निवृत्ति के पोषक–दर्शनों का विकास भिन्न समुदायों के बीच हुआ है।